महादेवी वर्मा के काव्य में विरह रूप

डॉ. प्रतिभा जोशी*

छायावादी युग की आधार स्तम्भ महादेवी वर्मा ने कविता के माध्यम से स्वयं को, समाज को, विश्व को और अदृश्य परमेश्वर को जानने की कोशिश, की। वे पहली स्त्रीवादी साहित्यकार है जिन्होंने नारी वेदना के अतिरेक कारणों को अपनी लेखनी के माध्यम से सरस रूप से व्यक्त किया। महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा भी कहा गया है। उनकी कविताओं में अलौकिक प्रेम की विरह वेदना की अनुभूति होती है। 'नीरजा' में वे जीवन को विरह का जल जात कहती हैं विरह पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति इन पंक्तियों से स्पष्ट होती है:-

विरह का जलजात जीवन, विरका जलजात।

वेदना में जन्म करूणा में मिला आवास,

अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात।

जीवन विरह का जलजात।

विरह वेदना की एक ओर अभिव्यक्ति के जिसको उन्होंने प्रकृति समान माना है-

कैसा पतझड़ कैसा सावन,

कैसी मिलन विरह की उलझन,

कैसा पल घड़ियोंमय जीवन,

कैसे निशि-दिन कैसे सुख-दुख

आज विश्व में तुम हो या तम।

टूट गया वह निर्मम दर्पण।

---

*अतिथि प्राध्यापक हिन्दी तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशालादेवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर (म. प्र.)

इन पंक्तियों के माध्यम से विरह की वेदना में कोई ऋतु सुहानी नहीं लगती है। महादेवी जी ने विरह में वियोग करने वाले में ही प्रियतम की झाँकी प्रस्तुत की है। 'नीरजा' में उन्होंने अपनी कविता 'तुम मुझ में प्रिय परिचय क्या' के माध्यम से ही विरहणी के अंतर्मन में प्रिय के दर्शन करवाए हैं।

तुम मुझमें प्रिय। फिर परिचय क्या।
तारक में छवि प्राणों में स्मृति,
पलकों में नीरव पद की गति,
लघु उर में पुलकों की संसृति.
भर लायी हूँ तेरी चंचल
और करूँ जग में संचय क्या।
तुम मुझमें प्रिय। फिर परिचय क्या।

महादेवी जी की कविता में उनकी स्वयं की पीड़ा परिलक्षित होती है। जिस समय महादेवी का जन्म हुआ उस समय कन्या का जन्म अशुभ माना जाता था। ऐसी विषम परिस्थितियों और विडम्बनाओं के बीच महादेवी जी का जीवन व्यतीत हुआ। वे मीरा की तरह हमेशा अपने गिरधर के विरह में व्यथित रहीं। लेकिन मीरा की पीड़ा मीरा तक ही सीमित थी, परन्तु महादेवी की पीड़ा समस्त नारी जाति की पीड़ा है। उनकी कविता में स्त्री की कविता है जिसमें नायिका के पास संपत्ति के नाम पर आँसू और विरह तो है ही लेकिन इसमें कभी-कभी अभिमान भी झलकता है-

मिलन मंदिर में उठा हूँ
जो सुमुख में सजल गुण्ठन।
मैं मिटूँ प्रिय में मिटा ज्यों
तम्प सिकता में सलिल कण।
सजनि, मधुर निजत्व दे
कैसे मिलूं अभिमानिनी मैं।"

अभिमान होने पर भी कभी वियोगिनी का हृदय अपने कठोर प्रियतम के दर्शन का अभिलाषी है-

दीप सी युग-युग जलूँ, पर वह सुभग इतना बता दे,
फूँक सी उसकी बुझें, तब झार ही मेरा पता दे।

महादेवी जी लिखती हैं कि दुःख उनके निकट जीवन का काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है। 'रश्मि' की भूमिका में वे लिखती है" हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी ना पहुँचा सके, किन्तु हमारा एक बूंद आँसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता।" इसलिए वे अपने प्रियतम के लिए कहती हैं कि

"तुम दुख बन इस पथ से आना।"

जब पीड़ा अपने चरम पर पहुँचती हे तभी सुख की अनुभूति होती है।

पर शेष नहीं होगी यह, मेरे प्राणों की क्रीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूँढा, तुम में ढूँढेगी पीड़ा।
चिर ध्येय यही जलने का
ठंडी विभूति बन जाना है पीड़ा की सीमा यह
दुख का चिर सुख हो जाना।

महादेवी जी को दुःख के दोनों रूप प्रिय है वह जो मनुष्य की संवेदनाओं से पूर्ण हृदय को सारे संसार के एक मजबूत बंधन में बाँध देता है और दूसरा वह जो समय और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतन के क्रन्दन को स्वीकार करता है।

महादेवी का व्यक्तिगत दुःख सर्वत्र अध्यात्म की ऊँचाईयों को स्पर्श करता है

मेरे हँसते अधर नहीं जग
की आँसू लड़ियाँ देखो।
मेरे गीले पलक छुओ मत
मुर्झाई कलियाँ देखो।

'नीरजा' और सांध्यगीत' में यह दु'खवाद अत्यंत सघन रूप से दिखाई देता है।

महादेवी का काव्य व्यक्तिगत संघर्ष और बुद्ध के दुखवाद से प्रेरित दिखाई देता है। वे दुःख को मधुर भाव से स्वीकार करती हैं उनका दुःख मधुर पीड़ा का भार है जिसे वह वहन करती है-

'मृग मरीचिका के चिर पथ पर,
सुख आता प्यासों के पग घर,
रुद्ध हृदय के पट लेता कर,

बुद्ध की करूणा निवृत्ति मूलक है और महादेवी की प्रवृत्ति मूलक है। वे पीड़ा में ही सुख की अनुभूति करती हैं। वे आत्मा को नित्य मानती है तथा अमरत्व में उनकी आस्था भी है। लेकिन क्षणभंगुर होते जीवन को बौद्ध मतानुसार ही स्वीकारती हैं—

जब असीम से हो जायेगा
मेरी लघु सीमा का मेल,
देखोगे तब देवी अमरता,
खेलेगी मिटने का खेल।

इस तरह महादेवी का काव्य बौद्धवाद से प्रेरित या प्रभावित दिखाई देता है, जिसे तरह 'कबीर' भी बौद्धवाद से प्रेरित पंक्तियाँ लिखते है-

काहे री नलिनी तू क्यूँ कुम्हलानी,

तेरे हो नाल सरोवर पानी।

स्त्री के विभिन्न रूप महादेवी के काव्य में परिलक्षित होते हैं। उनके अनुसार नारी, मात, भगिनी, पत्नी, पुत्री आदि रूपों में कोमल एवं कठोर भावनाओं के साथ जीवन व्यतीत करती है स्त्री के विभिन्न रूप महादेवी के काव्य में परिलक्षित होते हैं। उनके अनुसार नारी, मात, भगिनी, पत्नी, पुत्री आदि रूपों में कोमल एवं कठोर भावनाओं के साथ जीवन व्यतीत करती है-

मैं नीर भरी दुःख की बदली

विस्तृत नभ का कोई कोना

मेरा न कभी अपना होना

परिचय इतना इतिहास यही

उमड़ी कल भी, मिट भी आज चली।

इस तरह महादेवी की कविताओं में रहस्यवाद भी स्पष्ट रूप से झलकता है, जैसे:-

'जग पतझर का नीरव रसाल, पहने हिम जल की अश्रुमाल,

मैं पिक बन जाती डाल-डाल सुन फूट-फूट उठते पल-पल सुख-दुख मंजरियों के अंकुर।'

प्रकृति को चेतन बनाकर महादेवी ने उसकी जड़त्ता को दूर करके एक सरस संसार बना दिया है यही छवि प्रसाद की कामायनी में देखने को मिलती है-

नीचे जल था ऊपर हिम था, तरल था एक सघन,

एक तत्व की ही प्रधानता कहो उसे जड़ या चेतन।

इस तरह महादेवी जी ने बौद्धवाद, रहस्यवाद के साथ-साथ अपनी कविताओं और गीतों में करूणा को भी विशेष रूप से स्थान दिया है वे अभिशप्त नारी के अछूते बचपन, असमय ढलते यौवन व तिरस्कार सहने बुढ़ापे का करूण वर्णन करती है-

मैं कंपन हूँ तू करूण राग

मैं आँसू हूँ तू है विषाद

कहता है जिनका व्यथित मौन हम-सा निष्फल है आज कौन?

निर्धन के घन सी हास रेख जिनकी जग ने पानी ने देख

उन सूखे होंठो के विषाद में मिल जाने दो हे उदार

फिर एक बार बस एक बार

महादेवी वर्मा का समग्र साहित्य करूणा से परिपूर्ण है। उनका स्त्री मन करूणा की कांति से पूर्ण है। वे जीवन रूपी बालका को संसार में क्रीड़ा हेतु भेजती हैं लेकिन जब बालक संसार की कठिनाईयों या काँटों से बिंध जाता है तब वह माँ के रूप में उसे अपने आँचल का आश्रय भी देती है-

पलकों पर घर-घर अगणित शीतल

अपनी साँसों से पोंछा वेदना के क्षण

हिम स्निग्ध करों से बेसुध प्राण सुलाया।

महादेवी का यही करूण एवं संवेदनशील भाव उन्हें दूसरों से भिन्न है। उनके अनुसार नारी जीवन समर्पण का नाम है। वे भारतीय नारी का प्रतिमान थीं। अंत में हम कह सकते हैं कि महादेवी जी के काव्य में प्रकृति चित्रण, बुद्धवाद, स्त्रीवाद व रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। स्त्री के मन की अंतर्वेदना व पीड़ा का ज्ञान व अनुभव उन्हें अपने युग से मिला था उनका यही ज्ञान व

अनुभव उनकी काव्य कृतियों में परिलक्षित होता है। वे बीसवीं सदी की ऐसी महान् कवयित्री थीं जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त था। महादेवी की काव्य रचनाएँ छायावाद की मूल्यवान उपलब्धि है। महादेवी वर्मा एक सफल रहस्यवादी कवयित्री यथार्थवादी गद्यकार, समन्यवादी आलोचक होने के साथ-साथ संस्मरण लेखिका, सामाजिक एवं ललित निबंधकार तथा समाज एवं राष्ट्रसेविका थी। हिन्दी साहित्य में उनका चहुँमुखी व्यक्तित्व व उनकी रचनाएँ सदैव अविस्मरणीय हैं।